



पाठ-सात

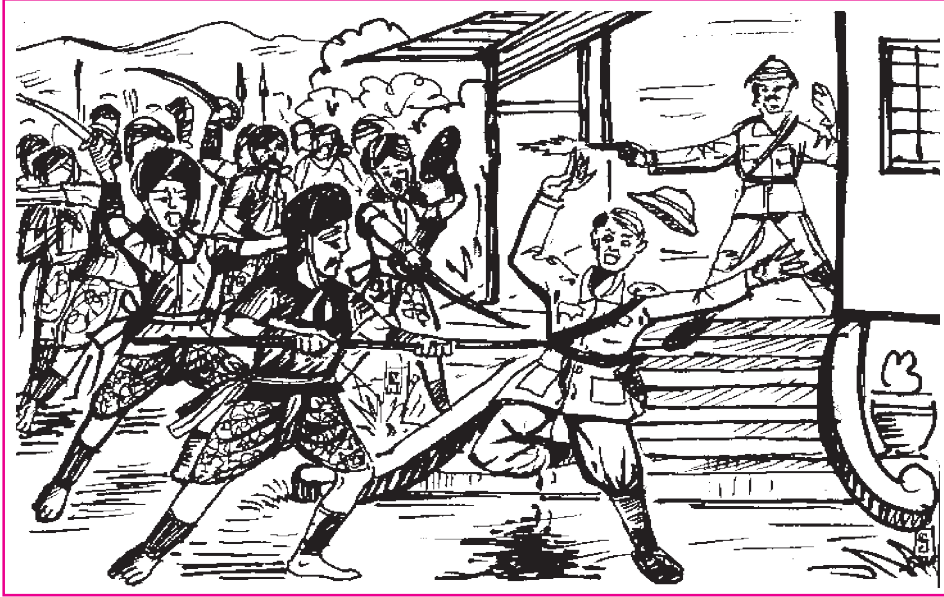
जनरल थांगाल



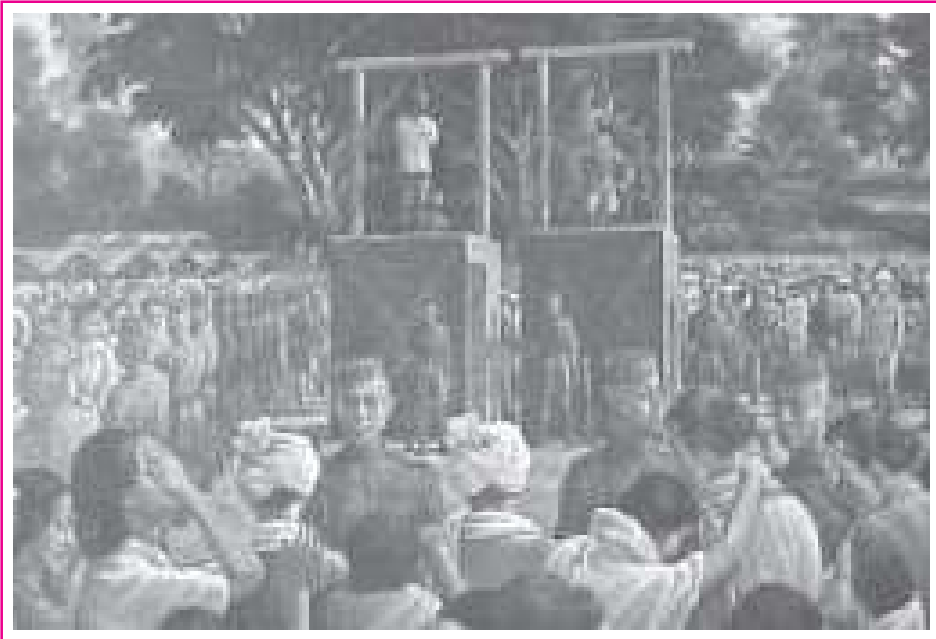
जब जब तेरह अगस्त आता है तब तब जनरल थांगाल का नाम भी अन्य शहीदों के नामों के साथ-साथ हमारे स्मरण में आता है। जनरल थांगाल वीर, साहसी और कुशल राजनीतिज्ञ थे। उनके जन्म स्थान तथा उनके माता-पिता के बारे में कुछ विवादास्पद बातें निकली हैं। कुछ पुस्तकों तथा लोकवाद से प्राप्त समाचार के अनुसार वाङ्खै अडोम लैकाई में सन् 1806 में उनका जन्म हुआ। उनके पिता का नाम श्री क्षेत्री सिंह तथा माता का नाम श्रीमती थोइनु देवी थे। उनके बचपन का नाम काडबम चिदानन्द सिंह था। बचपन से ही उनमें साहस, वीरता तथा कुशल राजनीतिज्ञ के गुण युक्त थे।

वे बचपन से ही संघर्ष में दिलचस्पी लेते थे। वे मृत्यु से डरते नहीं थे। इन गुणों को देखकर महाराज गंभीर सिंह ने उन्हें सूबेदार के पद में नियुक्त किया। उन्होंने राज्य के विकास के बहुत काम किए। उन्होंने राज्य की राजनैतिक स्थिति का खूब अध्ययन किया। उन्होंने राज्य की शक्ति बढ़ाने के लिए विशेष नियम बनाए। उस समय राज्य का कानून बनाना और किसी गंभीर विषय पर विचार करना केवल राजदरबार में ही किया जाता था। उनका राजनीति संबंधी अनुभव इतना गहरा था कि कभी देश की संकटकालीन अवस्था में उनकी बात महाराजा तक मानते थे। अवस्थानुसार उनकी सलाह को सब दरबारी महत्व देते थे।

राजा चन्द्रकीर्ति जब कछार में थे तब थांगाल भी उनके साथ थे। महाराज को थांगाल की रणनीति में कुशल होना तथा सेनानायक होने का परिचय ज्ञात हुआ। इसलिए चन्द्रकीर्ति महाराज ने उनको 'जनरल' की उपाधि से विभूषित किया। राज परिवार के सभी लोग उनका सम्मान करते थे। जब कुलचन्द्र मणिपुर के राजा हुए तब कुलचन्द्र और युवराज टिकेन्द्रजीत दोनों ने शासन सम्बन्धी कार्यों में थांगाल जनरल की सलाह ली थी।



थांगाल बचपन से ही न्यायप्रिय थे। वे एक बार जो कह देते थे उसे अन्त तक निभाते रहते थे। उनका धर्म था राजाज्ञा का अन्त तक पालन करना तथा प्रजा को अपनी सन्तान की तरह प्यार करना। राज्य के हित के लिए उचित कार्य करना उनका विशेष गुण था। राजकुमार टिकेन्द्रजीत पर उनका विशेष प्रेम था। जब अंग्रेजों ने टिकेन्द्रजीत को पकड़ने और मारने के लिए षड्यंत्र किया तब वे बहुत नाराज हुए। इसलिए उन्होंने अंग्रेजों से बदला लेने के लिए फ़ौज तैयार करके अंग्रेज अफसरों को घेर लिया। उपायहीन अंग्रेज अफसरों ने राजमहल में शरण माँगी। शत्रु होकर भी टिकेन्द्रजीत ने उनको शरण दिया। टिकेन्द्रजीत के चले जाने के बाद क्रोधित जनता ने अपराधियों को दण्ड देने की आवाज उठाई। पहले तो थांगाल ने अपराधियों को राज्य की ओर से दण्ड देने की बात कही, किन्तु क्रोधित जनता उसे नहीं मान रही थीं। मुठ-भेड़ की नौबत आ गई तो उन्होंने अंग्रेजों को मौत के घाट उतार दिया। यह खबर सुनकर युवराज टिकेन्द्रजीत को बड़ा दुख हुआ। इस घटना का स्पष्टीकरण थांगाल ने इस प्रकार दिया था कि “उन अपराधियों ने निरपराध मणिपुरियों को मार डाला; यह उसका परिणाम ही है।”



मणिपुरी जनता द्वारा अंग्रेजों के मारे जाने से अंग्रेज सरकार आग बबूला हो गई। उस घटना से अंग्रेज सरकार को मणिपुर पर आक्रमण करने का मौका मिल गया। उन्होंने बरमा(वर्तमान म्यान्मार), कोहिमा और कछार की तरफ से आक्रमण किया। थांगाल ने पूरी रण-कौशल, कूटनीति और बड़े सूझ-बूझ के साथ अंग्रेजों का सामना किया। परन्तु विशाल अंग्रेज सेना तथा शक्तिशाली हथियारों के सामने अल्प-संख्यक मणिपुरी सेना बहुत दिनों तक नहीं टिक पाई। फिर भी मणिपुर के देशभक्त वीरों ने अन्तिम साँस तक शत्रुओं का सामना किया। आखिर युवराज टिकेन्द्रजीत और जनरल थांगाल को अंग्रेजों ने बंदी बना लिया। 13 अगस्त 1891 के दिन को युवराज टिकेन्द्रजीत और राजनीतिज्ञ वीर योद्धा थांगाल को फाँसी पर लटका दिया। इस दिन को राज्य सरकार “देशभक्त दिवस” के नाम से राज्यस्तर पर पालन कर रही है।

कठिन शब्दों के अर्थ—

दिलचस्पी	= शौक, मनोरंजकता।
नियुक्त करना	= नियोजन करना, स्थिर करना।
कानून	= विधान, विधि, राज नियम।
गंभीर	= गहरा, ऊँची और भारी, जटिल।
अनुभव	= प्रत्यक्ष ज्ञान, अनुभूति, भोगना।
गहरा	= गंभीर, जिसकी थाह बहुत नीचे हो।
विभूषित करना	= अलंकृत करना, शोभित करना, सम्मानित करना।
निभाते रहते थे	= निर्वाह करते रहते थे, पालन करते रहते थे।
राजाज्ञा	= राजा की आज्ञा, राज्य का आदेश।
हित के लिए	= भलाई/उपकार/लाभ के लिए।
देशभक्त	= देशप्रेमी।

मुठ-भेड़	= भिड़न्त, सामना।
नौबत	= अवस्था, दशा, दुर्दशा।
मौत के घाट उतार देना	= मार डालना, भृत्य को प्राप्त होना।
आग बबूला होना	= बहुत अधिक क्रुद्ध होना, गुस्सा होना।
नहीं टिक पाना	= नहीं ठहर पाना, नहीं सह पाना।
सांस	= श्वास, दम।
योद्धा	= सैनिक, सिपाही।

प्रश्न-अभ्यास

1. थांगाल के बचपन का नाम क्या था ? बचपन में वे कैसे थे ?
2. थांगाल को 'जनरल' की उपाधि किसने दी और क्यों ?
3. मणिपुर को अंग्रेजों से हुए युद्ध में पराजित क्यों होना पड़ा ?
4. 'देशभक्त दिवस' कब और क्यों मनाया जाता है ?
5. जनरल थांगाल की जीवनी संक्षेप में लिखिए।
6. थांगाल के चरित्रिक गुणों को लिखिए।
7. अंग्रेजों के साथ किए गए युद्ध से संबंधित पाँच देशभक्तों के नाम लिखिए।
8. अन्य पुस्तकों को पढ़कर सन् 1891 के युद्ध के बारे में दस वाक्य लिखिए।

* * * * *